सेवा तत्व

यह सृष्टि जो हमें दिख रही है- इसकी एक दिन रचना होती है, कुछ दिन तक यह रहती है..., इसका संहार हो जाता है, यह खत्म हो जाती है, यह लुप्त हो जाती है, यह रहती नहीं है। परन्तु आप रहते हैं...आप...कौन? यह शरीर सम्बन्धित क्या चीज़ें हैं? यह शरीर किससे बना है? पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश। यह सब जो है, यह लुप्त हो जाता है, यह नहीं रहता। आप रहते हैं। ये जो material elements हैं, ये लुप्त हो जाते हैं भगवत् इच्छा से, परन्तु आप..., आप रहते हैं। Material जो है वह अलग है, आप बिल्कुल अलग हैं, आप divine हैं। You are divine, what you aspire is also divine. आप कभी aspire करते हैं, इच्छा करते हैं कि मुझे पानी मिले या हवा मिले या जल मिले? इससे आनन्द की इच्छा करते हैं आप कभी? नहीं करते। What you aspire for? What you aspire for is? "आनन्द", Happiness ! तो, what you aspire for is, really...is in reality, divinity.

आनन्द जो है वह material नहीं है, वह divine है। Happiness...happiness चाहिए? आनन्द चाहिए? जब सृष्टि नहीं होगी तब भी आपको आनन्द चाहिए होगा, तो कैसे मिलेगा जब सृष्टि नहीं है? आप इस सृष्टि से आनन्द चाहते हो? अगर सृष्टि नहीं होगी तो इसका मतलब आपको आनन्द नहीं मिल सकता क्या? नहीं, तब भी आपको आनन्द मिल सकता है, अब भी आपको आनन्द मिल सकता है, बस केवल जानना है कि आनन्द है क्या। "आनन्द" भगवान् का ही पर्यायवाची शब्द है...synonym; यह बात समझनी है, बहुत महत्वपूर्ण बात है। What you aspire for is? "आनन्द"। What a dog aspires for is? "आनन्द"। What a goat aspires for is? बकरी को क्या चाहिए? "आनन्द"। बिल्ली को क्या चाहिए? आपको क्या चाहिए? सबको एक ही चीज़ चाहिए। परन्तु आप यह समझ सकते हो कि आनन्द is divine, बिल्ली या बकरी नहीं समझ सकती कि आनन्द divine होता है। समझ रहे हो? Divine..., भगवान् divine हैं, totally spiritual हैं और भगवान् ही आनन्द का स्वरूप हैं।

"विज्ञानम् आनन्दं ब्रह्म"

(बृहदारण्यक उपनिषद् - ३.९.२८)

भगवान् ही आनन्द का मूर्तिमान स्वरूप हैं, यह मनुष्य जीवन में समझा जा सकता है। जब सृष्टि नहीं होती, तब भी आपको क्या चाहिए होता है? आपको क्या चाहिए होता है? आपको क्या चाहिए होता है? आपको क्या चाहिए होता है? भगवान् ! आनन्द, भगवान् एक ही हैं। जब सृष्टि से पहले आपको भगवान् चाहिए..., क्योंकि सृष्टि तो है ही नहीं, सृष्टि नहीं है पर आपको तो आनन्द चाहिए, वह आनन्द भगवान् हैं- सत्-चित्-

आनन्द विग्रह। तो जब सृष्टि हो जाती है तो आपको भगवान् के अलावा कुछ और चाहिए हो सकता है तब क्या? अब इस सृष्टि में आप हैं, तो भगवान् के अलावा कितना कुछ चाह रहे हैं, इससे बड़ी अज्ञानता क्या होगी?
जब सृष्टि होती है, हम इस देह में आते हैं..., यह देह कौन बनाता है? आप खुद, स्वयं? आपके brother? कोई बनाता है?

'This body is made by Kṛṣṇa, it is made for Kṛṣṇa.'

This body is made by Kṛṣṇa and it is made for Kṛṣṇa. This body is not made by you..., आपने तो नहीं बनाई, स्वयं, कि बनाई? नहीं। This body is made by Kṛṣṇa, is made for Kṛṣṇa. क्यों बनाया भगवान् ने? क्योंकि भगवान् चाहते हैं कि आप उनसे जुड़कर, उनको प्राप्त करके आनन्द प्राप्त कर सकें, क्योंकि वही आनन्द का विग्रह, मूर्तिमान् स्वरूप हैं। यह बात हमारे अन्दर बैठेगी नहीं जब तक, तब तक हमारी search for happiness खत्म नहीं होगी..., futile search for happiness..., व्यर्थ का भागना, बस भागना, अकारण भागना।

अब प्रश्न यह है कि इस संसार में हमको आनन्द कैसे मिलेगा? What you aspire for is? Divinity ! How can you get connection to Divinity? How can you get connection to Divinity?

'Connection to Divinity is via Divinity'

Connection to divinity is via divinity....

भगवान् से connection कैसे होता है भगवान् के धाम में किसी का? कैसे होता है? Simple..., simple बातें आपसे पूछेंगे। कैसे होता है भगवान् के धाम में सम्बन्ध? बोलिए? 'सेवा से।' उसी प्रकार से सेवा से ही हम भगवान् से, निरन्तर आनन्द से..., निरन्तर जुड़े रह सकते हैं। आनन्द चाहिए? तो निरन्तर सेवा में..., भगवान् के धाम में कोई एक भी व्यक्ति है जो दुःखी हो, एक भी व्यक्ति? क्यों? क्योंकि वह निरन्तर भगवान् की सेवा में डूबा हुआ है। वह और कुछ नहीं करता भगवान् की सेवा के..., तो यदि आपको भी वास्तव में आनन्द चाहिए तो आपको भी उन्हीं की तरह, जो हमेशा खुश रहते हैं, वही process अपनाना चाहिए। वे हमेशा खुश रहते हैं भगवान् की सेवा में जुड़कर।

तो Material world... This body is made by Kṛṣṇa, made for Kṛṣṇa, for Kṛṣṇa's service... इस body को आपने नही बनाया..., इसे आप... किसी की बनाई हुई चीज़ किसी purpose के लिए हम use कर रहे हैं, तो हम दण्ड के भागी होंगे ही होंगे। तो भगवान् की सेवा से ही हम भगवान् से जुड़े रह सकते हैं, आनन्द की सेवा से ही आनन्द से जुड़े रह सकते हैं, यह बात अच्छी तरह समझ लें, और कोई विकल्प नहीं है। अब प्रश्न उठता है, भगवान् की सेवा से हम कैसे जुड़े रह सकते हैं? यह तो हमने grossly सुन लिया है कितनी बार, भक्तों ने तो कितनी बार सुना, परन्तु इसको और deep जानिए, यह सेवा क्या होती है? आज हम सेवा तत्व पर विचार करेंगे, गम्भीर।

सेवा दो प्रकार से होती है- 'सामान्य सेवा' व 'वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा'। सामान्य सेवा मतलब भगवान् से जुड़े रहना, आनन्द से जुड़े रहना, भगवान् का लीला चिन्तन करके राधाकृष्ण का... जैसे अभी समय है, पौने सात (६:४५) बजे। तो राधारानी छत पर जाने की तैयारी कर रही हैं। छत पर जाकर श्रीकृष्ण को दूध दुहता, गायों से दूध निकालता दर्शन करेंगे, उनके नयन तृप्त होंगे और हम उनके साथ उनको सम्भालेंगे, क्योंकि वे आनन्द को सम्भाल नहीं सकतीं..., इतना आनन्द होता है। तो यह सेवा हम मानस सेवा करेंगे, इसको 'सामान्य सेवा' कहा जाता है। मानस सेवा में निरन्तर डूबे रहना। पहली बात तो यह समझ लीजिए कि भक्ति का मतलब है 'निरन्तर', unalloyed, without breakage। आपको 'आनन्द' थोड़ी देर..., थोड़ी-थोड़ी देर के लिए चाहिए कि हमेशा चाहिए? हाँ तो..., तो हमेशा ही जुड़े रहना है भगवान् से। तो इसलिए हमेशा जुड़े रहना दो प्रकार से है- या तो निरन्तर लीला चिन्तन करें, जैसे दास गोस्वामी करते थे साढ़े सात (७.५) पहर, लगभग साढ़े बाइस (२२.५) घंटे रोज़, डेढ़ (१.५) घंटे में खाना, पीना, सोना, नहाना, सब... एक तरीका यह है।

दूसरा तरीका है, 'वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा'। जब आप भगवान् की मानस सेवा करते हैं, लीला चिन्तन करते हैं तो आप भगवान् से तुरन्त..., तुरन्त जुड़ जाते हैं। भगवान् divine हैं। और जो उनकी सेवा होती है that is also divine... sevā is always divine, यह बात याद रखिए। You want divinity? 'You have to be connected to divinity via divinity and that divinity is sevā!' आप भगवान् की मानस सेवा करते हैं, राधारानी की, तो आप उनसे जुड़ जाते हैं, आनन्द से निरन्तर जुड़े रहते हैं। दूसरा तरीका है, 'वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा', 'गुरु की प्रेममयी सेवा', जिसमें लीला चिन्तन, श्रवण, कीर्तन भी होता है, परन्तु मुख्य भजनांग वह नहीं है, मुख्य भजन क्या है? 'गुरु की आज्ञा का दिन-रात पालन करना', वह भी कैसे? Without break, without break! हम अपने आप से पूछें, हम इन

दोनों में से कौन सी भक्ति कर रहे हैं? क्या निरन्तर गुरु की आज्ञा के पालन में डूबे हैं? या निरन्तर राधाकृष्ण की मानस सेवा में? तीसरी तो कोई भक्ति होती ही नहीं है। भक्ति मतलब 'आनन्द का तरीका'।

Your means to happiness is what? What is your means to happiness? बोलिए...? 'सेवा'। सेवा दो ही तरीके से होगी... होती थी, होती है और होगी। ऐसे नहीं कि थोड़ी देर लीला चिन्तन कर लिया, थोड़ी देर कुछ जैसे देखा..., उल्टा-सीधा देख लिया, थोड़ी देर अपने likes के अनुसार कार्य कर लिया, यह भक्ति होती ही नहीं है। भक्ति कभी खिचड़ी नहीं होती।

By merely being a husband, are you connected to divinity? Do you become divine by merely becoming a husband? Is this thing mentioned in any Scripture कि by merely becoming a husband, I become divine? कभी सुनी है ऐसी बात? या by merely becoming a wife, I become divine, I become happy? सुना है कि कोई wife बनकर खुशी को प्राप्त हो गई? या by merely becoming a father, I become..., I can become divine? सुना है कभी ऐसा? तो, कर तो हम यही रहे हैं। "I want to be a good father..." अच्छा ! Even if you are a good father, do you become divine? Are you connected to divinity by becoming a good father? Are you? No!

By being absorbed in sevā and simultaneously being a father or a wife or a kid or a brother, you can become divine. But, foremost is, you have to be absorbed in sevā. No matter you are father, son, wife or whatever, you have to be connected to divinity. By becoming a wife, you are not connected to divinity, you are connected to a man only. By becoming a mother, you are not connected to divinity, you are connected to, 'माया बद्ध जीव'। By being connected to divinity, you are connected to divinity, it is as simple as that. Water is water and petrol is petrol, it is as simple as that. या तो राधारानी की, श्रीकृष्ण की 'मानस सेवा' करें, तो हम उनसे जुड़े रह सकते हैं या गुरु की 'वैशिष्ट्यलिप्सु', मतलब गुरु की इच्छा अनुसार हम सेवा में अपने आप को झोंक दें, इससे हम दिव्यता से जुड़े रह सकते हैं। क्योंकि गुरु का हृदय क्या होता है? 'भक्ति महारानी का सिंहासन', divinity.

तो when we are connected to divinity, we are connected to happiness. Way to being connected to divinity is, either you get connected to "Rādhā Kṛṣṇa" or you get

connected to "Gurudeva"... There is no other way, no other way, no other way! अपना manufacturing करके भक्ति या आनन्द से सम्पर्क नहीं जोड़ा जा सकता। केवल सेवा से क्या हम भगवान् से जुड़े रह सकते हैं या आनन्द प्राप्त हो सकता है? केवल सेवा से? हो सकता है सेवा से केवल आनन्द प्राप्त? सेवा तो कितने भक्त करते हैं, तो आनन्द प्राप्त क्यों नहीं होता? हरिनाम भी कितने लोग लेते हैं। शास्त्रों में बताया जाता है...

"हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा।।"

(श्री श्री चैतन्य चरितामृत् आदि लीला ७.७६)

तो हरि का नाम तो सब लेते हैं, तो क्या सब आनन्द में रह पा रहे हैं? तो इसमें हमें और deep जाना पड़ेगा... और deep। और deep जाएँ इसमें। नाम कैसे लिया जाता है? दो प्रकार से। एक नाम है- "स्नेह युक्त नाम" और दूसरा- "सामान्य तरीके से" नाम लिया जाए। "स्नेह युक्त नाम"... *हरेर्नामैव केवलम्* है, परन्तु 'स्नेह युक्त'। सेवा से आप भगवान् से जुड़े रह सकते हैं, पर सेवा कैसे? 'स्नेह युक्त'..., as per Their will, not as per your will. As per whose will? Either Gaurāṅga's will or Guru's will, not as per your will... 'भगवान्' की इच्छा की पूर्ति में जब व्यक्ति लगता है उसको सेवा कहते हैं या 'गुरु' की इच्छा की पूर्ति में जब व्यक्ति लगता है तो उसको सेवा कहते हैं। अपनी इच्छा की पूर्ति में जब जीव लगता है तो उसको सेवा नहीं कहते, उसे भोग कहते हैं, कामना की सेवा-पूर्ति कहते हैं। हम भजन कीर्तन करते हैं ठाकुर महाशय का...

"गुरु मुख पदम् वाक्य, चित्त ते करिया एक्य,
आर ना करिह मने आशा।
श्रीगुरुचरणे रति, एइ से उत्तम गति,
जे प्रसादे पूरे सर्व आशा ।।"

(श्री श्री प्रेमभक्तिचन्द्रिका ४ - श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

"चित्त ते करिया एक्या"..., चित्त से हमको एक...एक हो जाना है। किसके चित्त से? गुरु के चित्त से या गौर के चित्त से, ध्यान दीजिए बात को। सामान्य सेवा..., गौर के चित्त से, राधारानी के चित्त से एक हो जाना या गुरु के चित्त से एक हो जाना... *"चित्त ते करिया एक्या"*। What are you? You are soul... पर आप... Are you चित्त? आप चित्त हैं? चित्त समझते हैं? मन, बुद्धि, अहंकार, चित्त, अंतःकरण... समझते हैं? आप चित्त हैं?

चित्त मतलब समझ लीजिए, your bio memory, your संस्कार..., sum total of... चित्त मतलब sum total of your likes and dislikes... अब समझ आ रहा है? चित्त होता है, आपकी likes और dislikes का bag, थैली। Are you likes and dislikes or are you soul? You are soul, आत्मा। आत्मा can be connected to anyone's चित्त..., can be connected to Sanjeev's चित्त, can be connected to Tarun's चित्त, can be connected to Guru's चित्त।

हम जब सेवा कर रहे होते हैं..., ध्यान दें, हम सोचते हैं, हम अपनी बात बताएँ कि गुरु *चित्त ते करिया एक्या* हमारा हो जाए। हम repeat करते हैं बात को, कि हमारे चित्त से गुरु का चित्त एक हो जाए। इसे भक्ति नहीं कहते बालक! गुरु के चित्त से एक होना है इसको भक्ति कहते हैं। क्यों? क्योंकि वे "Divine" हैं। आपका चित्त "Divine" है? नहीं, तो अगर आप चित्त से एक भी हो जाओगे तो आपको आनन्द मिलेगा? आनन्द किस से? आनन्द is Divine। तो when 'you', the soul is connected to चित्त, your चित्त..., it is connected to matter। Are you getting the point? When you are connected to your heart..., 'मैं अपने हृदय की सुनता हूँ', इसका मतलब आप दुःख की सुनते हो। 'मैं तो अपने हृदय कि सुनता हूँ'..., आपको कहा किसने है यह बात। शास्त्र कह रहे हैं, "गुरु" के हृदय की सुनो, *"चित्त ते करिया एक्या"*, 'तोमार' नहीं 'गुरुर', एइ भौतिक चित्त आछे..., Divine नहीं है।

आनन्द से जुड़कर ही तो आनन्द मिलेगा, पानी से जुड़कर ही तो प्यास बुझेगी, इतना simple है। या राधारानी के, कृष्ण के चित्त से जुड़ जाएँ या गुरु के चित्त से जुड़ जाएँ... अपने चित्त से जुड़ने के लिए कहा किसने है? कौन से ग्रन्थ में कहा है? अपनी पसन्द, अपनी नापसन्द..., यही जुड़े हुए हैं न हमेशा? 'मुझे तो यह पसन्द है, मुझे तो यह पसन्द नहीं है', अरे! What is the value of your likes and dislikes? It is all dead matter. It is all insignificant, it is all petty, it is all petty. When you are connected to your own बुद्धि, is that connection to Divinity? जब हम स्वयं की बुद्धि से जुड़े हैं, तो क्या वह दिव्यता से सम्पर्क है क्या? It is..., किस से सम्पर्क है वह? मल्लीन वस्तु से, मल...मल से भरी हुई वस्तु से। और हमने बताया 'सेवा'। सेवा का क्या मतलब है? सेवा का मतलब होता है...

"सेवा करे, सुख दिबे, एइ मात्र अभिलाष"

सेवा का मतलब क्या है? पहले तो यह समझें। हम बोलते हैं 'हम ठाकुर जी की सेवा करते हैं या गुरु की सेवा'...'सेवा' होती क्या है? सेवा का मतलब है, सेवा...सेवा मतलब ... *"सेवा करे, सुख दिबे"*, 'जिसकी हम सेवा करें, केवल उसके सुख की इच्छा होना'... *"एइ मात्र अभिलाष"*, और कोई अभिलाषा नहीं। *"सेवा करे, सुख दिबे"*। गौरांग की सेवा करें तो केवल गौरांग के सुख के लिए, मेरी likes-dislikes का उसमें कोई connection नहीं है। गुरु की सेवा करें तो केवल 'गुरु की प्रसन्नता', केवल 'सेव्य की प्रसन्नता', उसमें मेरे likes-dislikes का कोई प्रश्न नहीं है। अगर मेरे dislikes और likes आ रहे हैं तो क्या वह गुरु की सेवा है? किसकी सेवा है वह? वह 'likes और dislikes की सेवा' है। समझ रहे हैं आप बात को?

जब आप कृष्ण की सेवा करते हैं तो, वही कृष्ण की सेवा है। जब राधारानी की सेवा करते हैं तो वही राधारानी की सेवा है। जब गुरु की सेवा करते हैं तो गुरु की सेवा है। जब likes-dislikes की सेवा करते हैं तो वह likes-dislikes की सेवा है, बस। आप देखिए, आप किसकी सेवा कर रहे हैं? सेवा तो करनी पड़ेगी। आत्मा क्या है? जीव क्या है? आत्मा क्या है?

"जीवेर स्वरूप हय, कृष्णेर नित्यदास।
कृष्णेर तटस्था शक्ति, भेदाभेद प्रकाश।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत् मध्य लीला २०.१०८)

दास तो सेवा करेगा ही करेगा, या तो भगवान् की या गुरु की सेवा करेगा या अपने likes-dislikes की। और जिस क्षण अपनी likes और dislikes की सेवा में जुड़ते हैं, उस क्षण दुखी हो जाएँगे। क्यों? क्योंकि आपकी likes और dislikes divine हैं? Divine हैं? Divine नहीं हैं। When you are not connected to divinity how can you get divinity i.e. happiness. सेवा जो है, हमेशा स्नेह पूर्वक की जाती है। स्नेह क्या...कैसा होना चाहिए सेवा करते हुए? Overflowing! वाणी से, gestures से, हमारे प्रत्येक... हर प्रकार से, सेवा over... अति स्नेह overflowing होना चाहिए। भगवान् के धाम में हर कोई कैसे सेवा करता है? जैसे हम सेवा करते हैं वैसे? थोड़ी अपनी, थोड़ी भगवान् की likes...सब चलता है। जैसे वे करते हैं, वैसे हम करेंगे तो ही हम खुश रहेंगे। नया तरीका invent नहीं करना...nothing has to be invented, we just have to follow.

इस युग में हरिनाम ही सार है, हर चीज़ का... *"हरेर्नामैव केवलम्"*, तो प्रश्न उठेगा कि हम सेवा की बात क्यों कर रहे हैं? क्यों कर रहे हैं सेवा की बात? हरिनाम है, हरिनाम

करते रहो। पर क्या मायाबद्ध जीव जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य से ग्रस्त है तो वह निरन्तर हरिनाम कर पाएगा? कर पाएगा, जिसमें कामनाएँ ही कामनाएँ हों? तो कामना को कैसे सेवा में लगाया जाता है? ठाकुर महाशय कहते हैं इक्कीसवीं (२१) त्रिपदी में...

"काम क्रोध लोभ मोह, मद मात्सर्य दम्भ सह,
स्थाने स्थाने नियुक्त करिबो।
आनन्द करि हृदय, रिपु करि पराजय,
अनायासे गोविन्द भजिबो।।"
(श्री श्री प्रेमभक्तिचन्द्रिका २१ - श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

'स्थाने स्थाने नियुक्त करिबे'... स्थाने स्थाने। क्या, यह काम... lust है भीतर? Lust, तो lust को क्या करना है? कृष्ण...। जो सेवा...जो कामना है, काम कृष्ण ...

"कृष्णसेवा कामार्पणे, क्रोध भक्तद्वेषी जने,
लोभ साधुसङ्गे हरिकथा।
मोह इष्टलाभ बिने, मद कृष्ण-गुण गाने,
नियुक्त करिबो यथा तथा।।"
(श्री श्री प्रेमभक्तिचन्द्रिका २२ - श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

जो कामनाएँ हैं उनको कृष्ण की सेवा में लगा देंगे तो कामनाएँ खत्म होंगी, शेष होंगी। अगर यह, हम इनको लगाएँगे नहीं सही स्थान पर, तो कामनाएँ कभी हटने वाली नहीं हैं। अब कोई पूछे कि यह कामना क्या होती है? Desire...गलत desire क्या होते हैं? दुःख हमारे को कैसे प्राप्त होता है? इसका उत्तर बताते हैं कृष्णदास कविराज...

"आत्मेन्द्रिय-प्रीति-इच्छा तारे बलि 'काम'।
कृष्णेन्द्रिय-प्रीति-इच्छा धरे 'प्रेम' नाम।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला ४.१६५)

अपने प्रीति...अपने likes, इच्छानुसार कोई कार्य करते हैं, likes- dislikes के अनुसार, वे क्या होते हैं? कामनाएँ... *"कृष्णेन्द्रिय-प्रीति-वांछा तार नाम, प्रेम"*। अपने इन्द्रिय की प्रीति के लिए कुछ भी कार्य करें, वह काम है, काम मतलब 'जिससे दण्ड मिलता है'। और गुरु की या गौरांग की प्रीति के अनुसार कोई कार्य करते हैं, तो हम divinity से तत् क्षण जुड़ जाते हैं। भगवान् से जुड़े तो आनन्द से जुड़ गए। आप देखते हैं, जब हरि कथा में होते हैं तो किसी चीज़ का स्मरण नहीं रहता, सिर्फ़ हरि का स्मरण, गुरु का स्मरण

रहता है, तो हमें ...तब हम आनन्द में रहते हैं। बाहर जाते हैं, उसी क्षण क्या हो जाता है? उनको भूलते हैं, बस...दुःख में डूब जाते हैं।

सेवा जो है एकमात्र माध्यम है जिससे हम आनन्द प्राप्त कर सकते हैं, आनन्द से जुड़े रह सकते हैं। और सेवा केवल एक ही प्रकार से होती है, किस प्रकार से? Atiiiiii... Ati के आगे जितने मर्ज़ी "i" लगा दीजिए, इतने "i"...Atiiiii स्नेह पूर्वक। अति... होता है न किसी की अति हो गई। अति, अति...अन्त नहीं है ऐसी अति का, अति स्नेह पूर्वक होती है सेवा।

जब भक्त सेवा में जुड़ते हैं, तो कई बार साधक बोलते हैं कि 'सेवा में problem आ रही है'। क्या यह सत्य है? क्या यह सत्य है? कभी सेवा में problem आती है? नहीं। जब हम सेवा नहीं करते तभी problem आती है। सेवा मतलब, *"आत्मेन्द्रिय-प्रीति इच्छा तार नाम काम"* और *"सेवा करे, सुख दिबे, एइ मात्र अभिलाष"*। तो जब हम सुख दे रहे हैं, सेव्य की प्रसन्नता के लिए कार्य कर रहे हैं, तो उसमें problem कहाँ है? उसमें तो problem है ही नहीं। उसमें तो problem नहीं है।

कभी आपने सुना है, कभी भी गोलोक में या वैकुण्ठ में, कभी भी किसी पार्षद ने बोला कि, 'मुझे सेवा में problem आ रही है', कभी सुना है? वैकुण्ठ में, किसी भी वैकुण्ठ में? अनन्त वैकुण्ठ हैं, गोलोक में इतने रस हैं, किसी पार्षद को कभी कोई problem आई सेवा में? जिसको problem आई है वह सेवा नहीं कर रहा यह समझ लें। Actually there is no problem, the problem is you think there is a problem and that is the problem, but actually there is no problem, there is no problem. You yourself are a calamity which has happened to you... yourself, you are a calamity... You know, what happened to you? Your Tarun has happened to you... What is your name? Ya? हाँ? हाँ this Sunil calamity has happened to you. Actually, you or he or she is...everyone is non-different, everyone is... चित् कण, pure spirit, non-different. But what has happened to you? Sunil? मुझे Sunil हो गया, getting my point? मुझे Rinky हो गई...you know this, this way.

This way calamity which is happened to you, some Ganesh has happened to you. वो होता है न, ऐसा भूत चढ़ गया किसी Sunil का या Ganesh का... We all are same, चित् कण। Likes of Sunil, dislikes of Sunil. What has...what has soul to do with likes or dislikes of anyone? You are getting my point? It is as simple...soul wants Supersoul 'Kṛṣṇa'. There is no question of anyone's likes or dislikes. Megha wants...Megha wants

happiness? No! You want happiness. Megha को कुछ नहीं चाहिए...you want happiness. You should know who wants happiness? 'Me, the soul'... Me, the soul, wants Kṛṣṇa. 'i want Kṛṣṇa'...कोई बीच में आए क्यों? कोई भी...कोई पुरुष, स्त्री, likes-dislikes क्यों आए? जिस क्षण कोई भी likes, किसी के भी आ गए..., आनन्द नहीं आ सकता जीवन में। केवल एक व्यक्ति...गुरु या गौरांग की likes से जुड़े हुए हैं, क्योंकि वे divinity हैं, then you are connected to divinity; otherwise you are, you are being connected to anyone's likes or dislikes, you are connected to duḥkha... Anyone's !

जब हम सेवा करेंगे, सही रूप से..., then we become a total new being. Sevā creates a total new being. Sevā transforms you. Why? Because अब तक आप कार्य किसके लिए, क्यों कर रहे थे? अपनी likes... But sevā transforms you. You don't... you forget you were, you were... you ever were Sunil. Sunil..., i got nothing to do with sunil. I am soul ! Sunil, Tarun, boy, male... i am not any, anything... You become a totally transformed being by sevā. 'Sevā is divine'. Devotion, भक्ति, सेवा, ये Touchstone हैं... Touchstone क्या होता है? हिन्दी? पारसमणी। पारसमणी है। 'The problem is - you don't allow the Touchstone to work on your being'... तुम अपने चित्त पर उसको छूने नहीं देना चाहते हो; तुम अपने इच्छा, प्रीति, अपने likes-dislikes के अन्दर ही घुसे पड़े हो। You don't allow devotion to work on you. Devotion is Touchstone, you don't allow to work on your being.

बोलते हैं - 'i am hurt'. बोलते हैं, सुना है यह कहावत...ये टीकाएँ - 'i am hurt'. क्या आत्मा...गीता में भगवान् बोल रहे हैं-

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।"

(गीता-२.२३)

न वह hurt होती है, न भीगती है, न गीली होती है, न आग लगती है... तुम बोलते हो 'i am hurt'..., then you forget who you are ! You forget Kṛṣṇa. You get absorbed in your likes and dislikes, how stupid ! बोलते हैं..., 'my heart is broken'. बताओ, आत्मा कभी broken होती है? वह प्रलय के बाद broken नहीं होती, उससे पहले कैसे हो जाएगी broken? I am broken..., what is broken? Your ego is broken, nothing else..., nothing else. These are all non-devotee statements... हाँ ! My heart is broken, मेरी

कोई value नहीं है... Value नहीं है? आत्मा की परम value है भगवान् के साथ हमेशा, आप सेवा तो करो। 'मेरी value नहीं है', 'I am hurt'.

यह जो शरीर है, यह क्या है? 'सेवा विग्रह'। या तो इससे आप गुरु या गौरांग की सेवा करो या अपनी गन्दी likes और dislikes की या किसी और की गन्दी likes और dislikes की। दो पैसे में अन्त..., हर चीज़ का निष्कर्ष बता रहे हैं आपको। *"चित्त ते करिया ऐक्या"*... गुरु के साथ *"चित्त ते करिया ऐक्या"*। किन-किन बातों में एक साथ..., एक चित्त होना है? अपने...आपके अपने बारे में जो opinion हैं, उसके बारे में आपको निर्णय नहीं करना चाहिए, गुरु का निर्णय हो कि आप क्या हो वास्तव में। अपना मत सोचो - 'मैं तो बहुत अच्छी हूँ', 'मैं तो बहुत अच्छा हूँ'। कोई मानता है मैं बुरा हूँ?

*आपका अपने बारे में opinion,

*opinion about others, and

*opinion about circumstances...

हर चीज़ में *चित्त ते करिया ऐक्या,* यह बहुत-बहुत गम्भीर बात है। यह नहीं समझेंगे न, तो बस aspire... aspiring for happiness ही रहेगा, never get happiness.

यह जो आज हम बता रहे हैं, नहीं समझोगे, त्रिकाल में सुखी नहीं हो सकते। आज की बात नहीं कर रहे..., कलियुग, द्वापर, त्रेता, कभी किसी युग में, किसी मन्वन्तर में कभी सुखी नहीं हो सकते। अरे, ब्रह्मा सुखी नहीं हो पाएगा वह अपनी likes-dislikes में...तुम...हम क्या सोचते हैं, हम क्या हैं? Science है। भक्ति Science है। सबके लिए applicable है..., सिख, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सबके लिए applicable है, कोई भी age, every gender. यह बात को अच्छी तरह समझना होगा। हम self check करें, अगर हम सेवा सही रूप से कर रहे हैं तो हम क्या बनेंगे? सेवा करने से क्या होगा?

"विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम्।।"

(हितोपदेश)

We will become more humble. जब humble होंगे तो हमारे relationships सबसे क्या होंगे? बहुत अच्छे हो जाएँगे। केवल humble व्यक्ति के ही relationships अच्छे हो सकते हैं भक्तों से, केवल humble व्यक्ति के। और कभी हमारे मुख से यह बात स्वप्न में भी नहीं निकलेगी, असली में छोड़ो, कि 'I have...मुझे problem है। I have problem'

Complaint करते हैं 'मेरी यह complaint है'। भक्ति तो दो प्रकार से होती है, धाम में करते हैं – committed devotee या complaining devotee. जो complaining devotee है, वह अति स्नेह पूर्वक आचरण नहीं कर रहा। आप क्या कहना चाहते हो कि आप अति स्नेह पूर्वक आचरण कर रहे हो और आपको सेवा में problem आ रही है, आप यह कहना चाह रहे हो? अति स्नेह पूर्वक आचरण नहीं कर रहे इसलिए सारी problem है और जब तक नहीं करेंगे तब तक problem का अन्त नहीं होगा। क्यों? अति स्नेह पूर्वक आचरण क्या है? It is divine. जब हम अति स्नेह पूर्वक आचरण करते हैं then we are immediately connected to divinity, happiness. Divinity means happiness. You are connected to अति स्नेह, you are connected to happiness; you are connected to Guru's Citta, you are connected to happiness; you are connected to Rādhā's Citta, you are connected to happiness. You should know आनन्द तत्व, यह है क्या, सेवा तत्व क्या है? क्यों करना है अति स्नेह? 'अति स्नेह पूर्वक', यह हमारा नित्य आचरण है, 'नित्य आचरण'। 'सदाचार' बोलते हैं न, सदाचारी? सदाचारी भक्त का मतलब ही यह है कि अति स्नेह पूर्वक, 'निरन्तर'... भगवान् के धाम में 'अति स्नेह पूर्वक' कब-कब होता है आचरण भक्तों का? वही यहाँ करना है।

"युगल चरण सेवि, निरन्तर एइ भावि,
अनुरागी थाकिबो सदाय।
साधने भाविबो जाहा, सिद्धदेहे पाबो ताहा,
रागपथेर एइ से उपाय।।"
(श्री श्री प्रेमभक्तिचन्द्रिका ५५ – श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

जो साधना काल में करोगे, वही तो सिद्ध देह प्राप्त होगा। जब यहीं अति स्नेह पूर्वक नहीं हुआ तो सिद्धि कैसे प्राप्त होगी? जीवन का लक्ष्य है 'कृष्ण प्रेम', यह बोलकर सिद्धि प्राप्त हो जाएगी? और आचरण कैसा भी कर लो आप? No !

हम प्रचार करना चाहते हैं... आप यहाँ प्रचार करने के लिए आए थे भक्ति में? किसलिए आए थे आप? आप तो गुरु की या गौरांग की सेवा के लिए आए थे। उसको भूल गए, फिर अपनी likes-dislikes में डूब गए फिर से। अरे बाबा ! जो संत हैं, उनसे आनन्द की गन्ध निकलती रहती है निरन्तर...आगे-पीछे, ऊपर-नीचे...'आनन्द गन्ध', वे जहाँ बैठेंगे अपने आप प्रचार हो जाएगा। तो हमको..., we have to radiate आनन्द गन्ध। गन्ध समझते हैं? Fragrance of आनन्द, happiness, अति स्नेह... radiate. Become मूर्तिमान स्वरूप of अति स्नेह, यह, इससे preaching होती है। हमने अक्षरों की preaching नहीं करनी, न।

अक्षरों की preaching नहीं..., स्नेह की, प्रेम की preaching करनी है। वह जगत अपने आचरण से यहाँ दिखाना है। अपने आप पूरी दुनिया आपके चरण में आएगा, इसको प्रचार कहते हैं और effortless होता है यह..., effortless. आप यहाँ प्रचार... किसलिए आए हैं हम भक्ति में? 'आनन्द के लिए'। आनन्द दो ही प्रकार से मिल सकता है..., या 'निरन्तर लीला चिन्तन', या 'निरन्तर गुरु सेवा', 'निरन्तर'। कभी-कभी यह अपनी..., यह preaching या कोई भी चीज़ क्यों आई मन में? मैं यह करुँगा, मैं यह ज़्यादा नहीं करुँगा, मैं कम करुँगा, मैं preaching नहीं..., यह क्या है? यह गुरु के चित्त के अनुसार ऐक्य है? तो अपना चित्त तो हमें पता है...likes-dislikes.

जब गुरु के चित्त से ऐक्य होते हैं तो हमारी बुद्धि क्या हो जाती है? प्रसादी बुद्धि, divine ! प्रसाद क्या होता है हमेशा? Divine. जब आपकी बुद्धि divine हो जाएगी तो journey आपकी divine रहेगी। जब आप अपनी बुद्धि से connected होते हैं..., you are connected to divinity? No ! Only when you are connected to divinity, you are connected to divinity, it's as simple.

कई बार सेवा करते हैं और सेवा करने के बाद हमें याद भी रहता है कि मैंने सेवा की... 'मैंने इतना सेवा की है, क्या-क्या नहीं किया मैंने?' ऐसे भक्त लोग बोलते हैं, neophytes, ऐसे बोलते हैं, जिनको कुछ अकल नहीं होती... 'मैंने क्या-क्या नहीं किया?' आपने कभी किसी व्यक्ति को सुना है- 'मैंने कितनी बार पानी नहीं पिया'। पानी पीते हैं रोज़? कभी किसी ने सुनाया है किसी को? 'पता है मैंने कल भी पानी पिया था, परसो भी पानी पिया था, tuesday को भी पानी पिया था, 2011 में भी पानी पिया था, 2000...' कभी सुनाया? It is so natural... पानी पिया था तो पिया था, इसमें सुनाने की क्या बात है? तो हमने सेवा की तो की थी, it is so natural for a Devotee. अगर भक्ति सही चल रही है, तो पानी पीने के समान है, आपको याद ही नहीं रहेगा आपने कभी कोई सेवा की थी। कभी किसी माँ को याद रहता है, उसने बच्चे का कितनी बारी take care किया था, रोटी खिलाई थी? स्वभाव है, वे खिला रहे हैं।

उसी प्रकार, सेवा अति स्नेह से करना स्वभाव है मेरा, आपको याद क्यों रह रहा है? याद रह रहा है इसका मतलब आप सही रूप से सेवा नहीं कर रहे। याद रहना, remembering कि you have done something... कभी रूप मंजरी को याद रहता होगा - 'मैंने कुछ सेवा की?' ललिता सखी को याद..., राधारानी को याद रहता होगा? आप किसके अनुयायी हो फिर? यह तो 'आनुगत्यमय सेवा' है। आपको याद रह रहा है, यह तो shameful बात है और मुँह पर भी आ जाता है...'पता है मैंने क्या-क्या नहीं किया'।

अरे ! Shame ! Such a shame ! How can you remember, which is so natural for you? 'अति स्नेह पूर्वक सेवा'। कभी किसी news में आया है कि आज इसने पानी पिया? कभी newspaper में आया है कि किसी ने पानी पिया? क्यों? It's such a natural activity. उसी प्रकार से अति स्नेह पूर्वक, selfless sevā of Guru- Gaurāṅga, its such a natural activity for a soul, who really..., जिसको आनन्द प्राप्त हुआ है, it is natural activity.

अब अति स्नेह पूर्वक आचरण जो होता है, साधना जो है, यह दो प्रकार से है..., 'विवेकसापेक्ष' और 'विवेकातीत'।

- 'विवेकसापेक्ष' - कि हाँ समझकर, कि 'हाँ मैं आत्मा हूँ, प्रेममयी सेवा, अति स्नेह पूर्वक सेवा करके ही मैं खुश रहूँगा'। इसे कहते हैं विवेक... विवेकसापेक्ष, कि जानकर 'what is right, मैं आत्मा हूँ', सब जानकर।
- एक होता है - 'विवेकातीत', natural हो जाता है devotee के लिए, कुछ सोचना ही नहीं पड़ता, वह उसका प्रत्येक कार्य लबालब, अति स्नेह से भरा हुआ होता है। बिना सोचे, बिना करे, natural.

एक होता है सोचकर बार-बार, हाँ शास्त्र में बोला, गुरुजी ने बोला, गुरुजी के साथ *"चित्त ते करिया ऐक्या"*।

अब बताइए भगवान् ने..., भगवान् के धाम में गुरुजी कुछ कहेंगे तो कभी उसमें कोई बुद्धि लगाएगा? तो अभी क्या लगाएँगे तो कभी भगवान् के धाम जाएँगे? बुद्धि नहीं लगाना चाहिए। *चित्त ते करिया...* वहाँ धाम में यही होता है, इसे सदाचार कहते हैं। 'गुरु-गौरांग की बात बिना बुद्धि लगाए मानना', इसे सदाचार कहते हैं। भगवान् के धाम में सदाचार क्या होता है? निरन्तर गुरु-गौरांग की सेवा, without thinking of one's own likes and dislikes. There are no likes and dislikes in Dhāma... But here also if you really want Happiness, there is only one way - Their way, not our way. There is only one way.

यह जो हमारा मन है न, यह एक है, either it can create more problems or it can create solution. अगर 'गुरु के', 'गौरांग के' चित्त से एक हो जाएँगे तो, it is solution. अपने चित्त से, अपने likes से एक रहेंगे तो, it will create further problems, अभी जंजाल कम नहीं हैं। Don't create fresh wounds, heal the earlier ones. Don't create fresh wounds, नई चोटें..., अपने likes-dislikes से जितना जुड़ेंगे और चोट अपने आपको

देंगे। वे divine नहीं हैं, हमारी likes-dislikes. आज हम किसी को पसन्द करते हैं, कल उसी को hate करते हैं, यह हमारा value है likes और dislikes की।

यह जो मन है, यह हमेशा भिन्न-भिन्न प्रकार के logic देता है- Why i should not do अति स्नेह पूर्वक आचरण? Why i should not do? यह माया किस प्रकार से जीव को भ्रमित करती है, उसे logics देती है कि आपको अति स्नेह पूर्वक आचरण क्यों नहीं करना? जबकि आपकी यह 'स्वरूपगत स्थिति' है। यदि माया में व्यक्ति है, तो उसका क्या लक्षण है? यदि भक्ति में व्यक्ति है, तो क्या लक्षण है? सबसे पहले जब नए-नए आए तो कृष्ण की, राधा की सेवा करनी है। फिर थोड़ा समझ आया तो कृष्ण, राधा और गुरु। फिर और समझ आया तो कृष्ण, राधा, गुरु और भक्त। और समझ आया तो कृष्ण, राधा, गुरु, भक्त और सब मनुष्य। फिर सब जीव जन्तु। ये 'V' का curve बनता है भक्ति में उन्नति का। और माया में अगर हम हैं, तो क्या होगा? मान लो, हम devotees सेवा में हैं, उससे कम हो जाएँगे, गुरु की सेवा उससे कम, या कृष्ण सेवा, फिर माया में जा सकते हैं। तो हम self check करें कि हमारा ऐसे बढ़ रहा है कि ऐसे हो रहा है, 'V' के ऊपर की ओर जा रहा हैं या हम नीचे की ओर आ रहे हैं? यह 'V' को हमेशा याद रखें। यह self check करें अपने आपसे, 'क्या हमारे लिए natural हो रहा है गुरु और वैष्णव सेवा बिना बुद्धि लगाए करना? Nature...'

"चित्त ते करिया ऐक्या", वास्तव में आनन्द प्राप्ति की..., जिस, जो कर रहा है, उसको उस समय आनन्द प्राप्त हो चुका, करना-धरना कुछ नहीं है। यह निर्णय करना है बुद्धि ने कि मैंने किसके चित्त से एक होकर कार्य करना है? अपने या किसी संत के। और जो संत हैं, गुरु हैं, गुरु कोई दीक्षा गुरु को नहीं बोला जाता। गुरु एक तत्व हैं, शिक्षा गुरु हों, दीक्षा गुरु, कोई भी गुरु, 'गुरु' 'गुरु' होते हैं। चैतन्य-चरितामृत में कृष्णदास कविराज कहते हैं, बताते हैं कि...

"शिक्षागुरु के त जानि, कृष्णेर स्वरूप।
अन्तर्यामी भक्तश्रेष्ठ एइ दुइ रूप।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला १.४७)

कि कृष्ण..., जो शिक्षा गुरु हों वे भी कृष्ण का स्वरूप हैं, दीक्षा गुरु वे भी कृष्ण का स्वरूप हैं। हमको बस गुरु, किसी भी गुरु, संत, महापुरुष के चित्त से ऐक्य करना है, *"चित्ते ते करिया ऐक्या"*, बस। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता किसकी दीक्षा कहाँ हुई, इससे कोई matter नहीं इस बात का।

और सबसे बड़ा तोहफ़ा क्या दे सकते हैं गुरु को? क्या तोहफ़ा दे सकते हैं? गुरु को यही तोहफ़ा दे सकते हैं कि वे जो आपको तोहफ़ा दे रहे हैं उसको स्वीकार कर लो, इससे बड़ा तोहफ़ा नहीं। आपको यही बोल रहे हैं, 'आप अति स्नेह पूर्वक आचरण कर लो' और कुछ नहीं। क्या तोहफ़ा दें? जो वे दे रहे हैं उसको..., वही बात मान लो बस, आपके लाभ के लिए है वह भी, यही तोहफ़ा है, गुरु इसी तोहफ़े से सबसे ज़्यादा प्रसन्न होंगे। कोई भी वास्तविक संत की प्रीति किससे होती है? जब वे आपको खुश होते हुए देखते हैं। आप कैसे खुश होंगे? जब बात मानेंगे, अति स्नेह पूर्वक आचरण करेंगे।

हमारी होती है कि इतना लोभ होता है, इतना लोभ है हृदय के अन्दर, आप सोचेंगे कि हममें तो पैसे का लोभ नहीं है, यही मन में आ रहा होगा कई भक्तों के? हममें तो पैसे का लोभ नहीं है, लोभ होता है 'self appreciation' का भी, 'मैं कितना अच्छा हूँ, मैं कितनी अच्छी हूँ'..., self appreciation. Self appreciation का यह cancer of ego है, कोई मुझे appreciate करे, मैंने सेवा की है, मुझे कोई appreciate करे। Natural activity है इसमें appreciate... पानी पीना कोई पी रहा है, 'कोई मुझको appreciate करे मैं पानी पी रहा हूँ', यह भी कोई बात है? पानी पी रहा है कोई, उसे appreciation मिलती हैं कोई भी क्या? कि हाँ जी ! आप किसलिए पी रहे हो? अपने लाभ के लिए। अगर अति स्नेह पूर्वक कर रहे हो किसके लिए? स्वयं के लिए। इस बात को अच्छी तरह समझना होगा।

Actually जो सेवा है, अति स्नेह पूर्वक, यह...sevā makes you live enlightenment, sevā makes you live..., sevā makes you live enlightenment. अति स्नेह पूर्वक सेवा, that is happiness. Journey is as good as..., गोलोक जाकर आनन्द नहीं मिलेगा, जिसको आनन्द यहाँ नहीं मिला सही पूर्वक, सही तरह सेवा नहीं की, उसको वहाँ पर भी कभी नहीं मिलेगा। 'Journey is as good as destination'... साधना भक्ति में भी प्रेमा भक्ति का अंश रहता है हमेशा। प्रेमा भक्ति में क्या मिलता है जीव को? 'आनन्द'। तो साधना भक्ति में भी आनन्द का अंश हमेशा विद्यमान रहता ही रहता है। अति स्नेह पूर्वक आचरण was the way, is the way, will, will only be, will, will be the only way ! There is no other way out ! अगर अति स्नेह पूर्वक नहीं है हमारा likes और dislikes पूर्वक है, तो इसका मतलब क्या है? कि 'मैं' आया तो 'वे', वे गए..., कौन गए? आनन्द गया। वे means 'कृष्ण', कृष्ण means आनन्द। 'मैं' आया कि 'वे' गए। प्रेम की गली बहुत संकरी..., is very shallow, इसमें दो व्यक्ति 'मैं' और 'वे' नहीं जा सकते, 'वे'..., He has to prevail, 'मैं' आया कि 'वे' गए।

"कृष्ण सूर्य्यसम माया हय अन्धकार।
जाहां कृष्ण ताहां नाहि मायार अधिकार।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला २२.३१)

कृष्ण आए कि मैं और मेरे likes-dislikes..., गुरु या गौरांग, कृष्ण आए तो मेरे likes और dislikes तिरोहित हो गए। और जैसे ही मेरे likes and dislikes आए तो कृष्ण तिरोहित। 'S I N', 'i' आया न 'i', तो 's ','n'... morning हो या night हो 'SIN' बन जाएगा, 'SIN'... And 'U', वे आ गए तो 'SUN' बन जाएगा, otherwise 'SIN'. This body is made by Kṛṣṇa, made for Kṛṣṇa.

एक मृत व्यक्ति को जीवित करना आसान है, पर एक बद्ध जीव को अति स्नेह पूर्वक आचरण समझाना, उसको transform करना..., unless until someone really, LORD really empowers somebody to do this, no one can do this, it's impossible, it's Impossible ! When you transform someone, this is the Highest miracle. किसी को, मृत को जीवित कर दिया तो उसका क्या हो जाएगा? वह चिन्मय बन जाएगा? वही likes-dislikes के साथ जीवित होगा फिर से। कौन सी बड़ी बात है। असली है, उसको वास्तव में जीवित करना। यह तो मृत का लक्षण है 'likes-dislikes से जुड़े रहना'। वास्तविक रूप से जीवित कैसे किया जाता है किसी जीव को? जीव को जीवित कैसे किया जाता है? उसकी likes- dislikes को हटा दो, बोलो 'तुम्हारे लाभ की नहीं है यह वस्तु, इससे तुम्हें दुःख मिलेगा'।

गुरु क्या होते हैं? संत क्या होते हैं? गुरु is One who gives formula, जिससे कि one can reproduce the innerworld happiness. He gives the formula to reproduce inner world happiness. यह science है, भक्ति is always a science. Spiritual Master will give you formula so that you can reproduce inner world happiness, which He..., which He Himself is experiencing. He can give you formula. वो एक कहावत है - घोड़े को पानी के पास ले कर जा सकते हैं, you cannot make a horse drink water. You can just take him to the place of where water is; Guru can take you to the place... I mean tell you all the science, until and unless you do 'Citta te koriyā ekyā' you will never, never, never get happiness. This holds true for past...to कलियुग, द्वापर, त्रेता, all yugas. This is science, 'you accept or you don't accept, truth remains truth'. And what is humility? Know the truth and honour the truth! मेरे और कृष्ण के बीच में

किसी को क्यों आने दूँ, मेरे गुरु के बीच में क्यों आने दूँ किसी को? किसी का मतलब है अपने likes को, ये भी किसी की हैं।

अगर हम अति स्नेह पूर्वक आचरण नहीं करते, तभी हमें किसी में दोष दिखते हैं। आपको फुरसत कब..., तभी मिलती है जब आप अति स्नेह पूर्वक आचरण नहीं करते। जो कर रहा है उसको कभी किसी में दोष feel नहीं होते। किसी के दोष feel नहीं होते एक क्षण के लिए भी, क्योंकि आपको फुरसत ही नहीं है अति स्नेह पूर्वक आचरण से। आप free होंगे तो सोचोगे इस बारे में, आप free ही नहीं हो आप इतने busy हो अति स्नेह पूर्वक आचरण में। अति, अति हो गई एकदम, एकदम अति 'स्नेह' की, लबालब..., just radiate आनन्द गंध। When you are radiating आनन्द गंध, can you see anyone's faults? No ! फुरसत ही नहीं है गलत चीज़ देखने की, सोचने की; time ही नहीं है। अरे, आनन्द के बारे में सोचें कि दुःख के बारे में सोचें? अपने चित्त से ऐक्य नहीं करना तो किसी के दोष देखने का क्या मतलब है? कि किसी के चित्त से ऐक्य कर रहे हैं। एक तो अपना कम था क्या, किसी और का साथ में कर लिया ! बताओ, गुरु गौरांग के चित्त से नहीं कर रहे।

Either I am a committed devotee or I am a complaining devotee. Complaining person can never be happy, only a committed person, I..., मेरे को विवेकपूर्वक अति स्नेह पूर्वक आचरण करना है, विवेक, विवेकशील होकर। हाँ, यह ठीक नहीं है इसके अलावा कुछ। और ये don't use these bad silly words – 'i am hurt', 'i am broken', 'मेरी value नहीं'..., this is all kiddish words, किसी बुद्धिमान व्यक्ति को शोभा नहीं देते ये शब्द। 'Sevā creates new you', new you! Sevā creates new you, why? Because sevā is divine, sevā is happiness. सेवा ही आनन्द है।

तो जो सेवा कर रहे हैं वे अपने ऊपर ध्यान दें कि क्या वह अति स्नेह पूर्वक है या नहीं? जो अभी तक सेवा में नहीं हैं, वे तन हो, मन हो, धन हो कैसे भी सेवा में जुड़ें। आप देखेंगे, जब भी भगवद् सेवा करेंगे आप आनन्द में स्थित हो जाएँगे। सेवा से आप तुरन्त connect हो जाते हैं भगवान् से। अब यह है कि आपने connection कितनी देर रखना है, एक second, आधा घण्टा प्रवचन के समय या चौबीस घण्टे, यह free will आपके पास है, कि आप हर समय आनन्द से जुड़े रहना चाहते हैं या अपनी likes-dislikes से। आपकी likes-dislikes और कुछ हैं पर आनन्द नहीं हैं, यह बात समझ आ जाना चाहिए।

गुरु-गौरांग..., They are Most Selfless People, उनको हमारे से कभी कुछ नहीं चाहिए। वे सिर्फ़, वह 'चाहिए' शब्द ही उनकी dictionary में exist नहीं करता, कि 'चाहिए'। 'To give'. When you give, you get! When you give अति स्नेह, what are you going to get? Loads of अति स्नेह from all directions. You are giving अति स्नेह to..., love to everyone, what are you going to get from everyone? अति स्नेह, लबालब, डूबे रहें। अरे बाबा, जब अति स्नेह Divine है, उससे कौन आकर्षित होता है? भगवान् दौड़े-दौड़े चले आते हैं जो अति स्नेह पूर्वक आचरण करता है, जीवों की तो बात ही क्या है? भगवान् उस आनन्द गंध से बचे नहीं रह सकते, ऐसे खींच कर लेकर आती हैं उनको, ये पकड़कर रस्सी से। ऐसे यूँ, 'बंधे चले आना', अति स्नेह पूर्वक आचरण जो करता है। उस आनन्द गंध से वे खींचे चले आते हैं, तो जीव-जन्तु की तो बात ही क्या है।

सेवा is divine, अति स्नेह, this is divine. हम सोचें, problem है, मेरे को problem आ रही है। सेवा में कोई problem नहीं है, problem तुम खुद हो। You yourself are a problem. बाहर की ज़रुरत नहीं, तुम खुद ही problem हो। अरे ! Everyone wants love, everyone wants happiness... अति स्नेह पूर्वक व्यवहार, अगर आप दोगे तो किसी को problem होगी? The problem you are not doing this, that is the problem. आप अपने स्वरूप में नहीं आचरण कर रहे सही, तो दुःख तो रहेगा।

जब अर्जुन ने श्री कृष्ण को बताया - 'मैं युद्ध नहीं करुँगा, यह हो जाएगा, वह हो जाएगा'। हाँ, तो यह किसकी likes और dislikes थी? अर्जुन की। भगवान् की कोई भी..., उसका कोई भी सरोकार था? भगवान् ने एक बात बोली, उसी से अर्जुन का... कहते हैं torned him apart, what were those two beautiful words?

"कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन।।"

(गीता-२.२)

यह मल तुम में आया कैसे? यह बताओ पहले तुम, बातें सारी छोड़ दो। Leave aside everything, अर्जुन sit, बैठो। यह तुम बताओ यह, यह मल, ये फालतू की बातें आई क्यों? "यह ऐसा है, वह ऐसा है, उसको मैं नहीं करुँगा, उसने यह कह दिया", यह क्या है? You do your work - *"चित्त ते करिया ऐक्या"*, why are you concerned with everyone? *"कुतस्त्वा कश्मलमिदं"* ! अपने likes-dislikes तो मल हैं, भगवान् गीता में बता रहे हैं, "यह आया कैसे तुम में, यह बताओ पहले।"

गुरुजी, गुरुजी यह पूछें आपसे..., 'भाई ये जो बातें, problem हैं, मेरे को बहुत सारी problem हैं...' बैठो, वे गुरुजी एक ही बात बोलें...कि, *"कुतस्त्वा कश्मलमिदं"*, 'यह पहले बता यह मल आया कैसे?' 'Soul है?' 'हाँ।' 'Happiness चाहिए?' 'हाँ'। 'तो गुरु या गौरांग के चित्त से जुड़ जा, आ गई समझ? अच्छा वापिस जा। अपनी कहानी मत सुनाओ।' 'अरे मेरी बात सुनो...' 'अरे! सुनें, तुम मेरी बात सुनो।' वे कह रहे हैं, *"चित्त ते करिया ऐक्या"*।

हम जब गुरुजी के पास आते हैं तो हम चाहते हैं कि..., support... we don't want the solution when we come to Guru, we want support to our ego... मेरी likes को support मिल जाए कि what I am doing is right. We don't want a solution. Solution is just one – 'अति स्नेह पूर्वक आचरण', कोई प्रवचन की ज़रुरत नहीं है उसके बाद, कोई प्रचवन नहीं चाहिए। आप यह करो, you will get happiness. 'When you will get happiness you don't aspire for anything else'. सेवा में problem नहीं हैं..., सेवा न करने में, सही रूप से। कैसे सेवा नहीं होती? *"आत्मेन्द्रिय प्रीति वांछा"*, *"आत्मेन्द्रिय"*... स्वयं की प्रसन्नता के लिए, अपनी likes-dislikes के लिए... *"तार नाम काम"*, 'काम'..., काम is such a dirty word. *गुरु-गौरांग प्रीति, प्रीति इच्छा तार नाम प्रेम।*

जैसे आपने सुना होगा संसार में कई लोग होते हैं stamp collector, stamp finder... होते हैं, stamp finder? Stamp को ढूँढते हैं। कहीं पर भी जाएँगे उनके दिमाग में क्या होता है? Stamp ढूँढ़ना। 'Coin finder'... सुना है शब्द? Coin ढूँढते हैं, अलग-अलग सिक्के। और उसी प्रकार से भक्त क्या होते हैं? 'Quality finder', गुण देखते हैं सब जगह। Fault finder नहीं होता भक्त कभी भी, कि किसी में दोष देख रहा हो। वह भक्त देखता ही नहीं, उसको दिखता ही नहीं है। भक्त को दोष सिर्फ एक...एक व्यक्ति में दिखता है। किसमें? 'खुद में'। वह है भक्त, वह है जो व्यक्ति हमेशा खुश में, खुशी में रहता है, उसको किसी में दोष नहीं दिखता। Fault finder जो है, वह अदोषदर्शी... भक्त अदोषदर्शी है, न कि fault finder, fault ढूँढ रहा है। भक्तों का क्या है? 'Quality finder', 'गुण finder'.

When you are not doing अति स्नेह पूर्वक आचरण then it... it means, you are caught up in the mental or physical world. जब आप अति स्नेह पूर्वक आचरण नहीं कर रहे, तो आप कहाँ पर फँसे पड़े हो? या physical या mental world में, बस, आनन्द में नहीं हो। आनन्द is beyond senses, beyond you, beyond your family, beyond your country, it's beyond everything. When you are connected to all this, then you are not

connected to that thing which you want- happiness..., which is beyond everything. You get connected to that while being in family, while doing job that is no problem and sometimes even if you are in the Altar doing pūjā you are not connected to that because you are connected to your likes and dislikes..., even in pūjā – ' i should do this way', no! This is again आत्मेन्द्रिय प्रीति वांछा, getting my point? And sometimes you are doing job but you can do it for pleasure of Guru, Guru told you, to go for job. And if you are going for job yourself then it is, your... again your likes-dislikes, again...again.

You want to preach that is your desire...What does Gurujī wants from you, ताकि आपकी शुद्धि हो that you should know. अपने चित्त का बोद्ध नहीं करवाना, उससे आनन्द नहीं मिलता। जब आप काम कर रहे होते हो business या job, क्या आपको अपने आप को remind करवाना पड़ता है कि मैं यह काम क्यों कर रहा हूँ? Remind करवाना पड़ता है? कितना simple सा answer होता है, 'लक्ष्मी के लिए कर रहे हैं', और कोई कारण नहीं है। पर जब सेवा करें, remind yourself why you are doing? जब भी सेवा कर रहे हो, remind yourself why you are doing? क्या यह मेरी likes-dislikes को छोड़ के कर रहा हूँ या फिर उसी को पकड़े हुआ हूँ? Why you are doing sevā? For... *"सेवा करे सुख दिबे"*, सेवा करते हुए सुख देना, न कि 'सुख मिलना यही अभिलाषा'। सुख दिबे, सेव्य की प्रसन्नता। **'सच्ची सेवा का फल अनिर्वचनीय होता है'।** सच्ची सेवा का फल अनिर्वचनीय... आनन्द क्या है? अनिर्वचनीय। जो बिल्कुल likes-dislikes से हटकर हरि की सेवा करते हो, उसका फल क्या होता है? आनन्द ही, 'अनिर्वचनीय आनन्द' होता है।

Disassociate yourself with your likes-dislikes and just connect yourself with Kṛṣṇa, Guru..., that's all. यही साधना है सारी। बोलते हैं न साधना कर रहे हो, क्या साधना है तुम्हारी? हरे कृष्णा करना? यह साधना नहीं है केवल। साधना यह है कि, "उनके" चित्त से जुड़ना, this is real sādhanā. हमने थोड़े दिनों पहले एक disciple से पूछा कि भई भक्ति कैसी चल रही है? मतलब क्या? 'अति स्नेह पूर्वक आचरण' कैसा चल रहा है? और कुछ नहीं पूछना, वह आप बताओ कैसा चल रहा है? ठीक चल रहा है तो आप बताओ, नहीं चल रहा तो आप बताओ..., ये सारा सार है हर चीज़ का।

अति स्नेह पूर्वक आचरण कर रहे हैं इसका मतलब आपने जितने प्रवचन सुने उसको अपने जीवन में लगाया, अगर नहीं कर रहे इसका मतलब जितने प्रवचन सुने वे जीवन में नहीं

लगाया। कितना 'सुना', यह महत्वपूर्ण नहीं है, कितना 'बुना', हृदय में कितना बुना है? आपने इतनी सारी ऊन ले आए, उसको ऐसे फैलाते रहे तो कभी sweater नहीं बनेगा, थोड़ा सा भी बुन लो, इतना सा भी, तो कुछ तो बना? एक ही बात बुन लें- 'अति स्नेह पूर्वक मेरा स्वभाव है, इससे मैं हमेशा आनन्द में रहूँगा'।

"चित्त ते करिया ऐक्या", यही इच्छा थी आज के दिन, इस तत्व को समझें हम और एक... We, we become transformed, we become a new being. 'Let devotion work on us, work on our being.' We do devotion but बाहरी तरीके से। Let devotion work on you. Devotion is touch stone, devotion is happiness. ऐसा नहीं है कि भक्ति करके वहाँ मिलेगा सुख..., यहाँ पर भी। ठीक है, आज का सत्र हम यहीं आज विश्राम देंगे। यदि किसी की कोई जिज्ञासा है, तो आप कर सकते हैं।

आखिरी बात हम बोल देंगे, 'ब्रह्मचर्य'। ब्रह्मचर्य सुना है आपने शब्द? ब्रह्मचर्य का मतलब celibacy नहीं होता। It is not mere physical celibacy which is brahmacarya... ब्रह्म में आचरण करना, अति स्नेह पूर्वक आचरण करना, यह है 'ब्रह्म में आचरण करना', transcendental आचरण, ब्रह्म-चर्या, 'चर्या करना', उसमें चर्या। It is not physical celibacy what we think it is. No ! It is, ofcourse that also is brahmacarya, but that is not the totality of brahmacarya. ब्रह्म में आचरण करना, अति स्नेह पूर्वक, that is brahmacarya. आप ब्रह्मचर्य हो? हाँ, यह है अति स्नेह पूर्वक, yes यह ब्रह्म में आचरण करना है। शादी-शुदा हो, अकेले हो, कोई सन्यासी हो, इससे कोई फर्क नहीं...अगर आप अति स्नेह पूर्वक कर रहे हो..., 'ब्रह्मचर्य', ब्रह्म में आचरण कर रहे हो। यह Spiritual world, ब्रह्म में रहने की..., उसमें यही आचरण होता है 'स्नेह पूर्वक'। गुण देखने से फुरसत नहीं, दोष देखने का समय किसके पास है? गुण देखने से फुरसत हो..., राधारानी के गुण कम हैं, भक्तों के गुण कम हैं क्या? इतने गुण, इतने गुण हैं खत्म ही नहीं होते, हाँ फुरसत ही नहीं हैं हमारे पास, दोष कैसे देख सकते हैं किसी के?

जो किसी की problem है वह आपका solution कैसे हो सकता है? अगर दोष हैं तो इसका मतलब उस व्यक्ति की भी problem है, तो वह आपका solution कैसे हो सकता है, आनन्द का? उसके बारे में सोचना? हम कभी भी यह न बोलें संत के पास जाकर कि हमें यह problem है, जब आप यह बोल रहे हैं..., you are waiting to be pursuaded हाँ, हाँ, हाँ...you are some sort of seeking इसमें...'हाँ हाँ'। क्या बोलें? सही तरह रहो तो ठीक हो जाओगे, अब सुधरोगे नहीं तो क्या करें, संत भी क्या करें? वे भी सुनते

रहते हैं, सुनते रहते हैं...ठीक है, ठीक है, 'अच्छा अति स्नेह पूर्वक कब करोगे'? 'आप ठीक हैं, आप भी ठीक कह रहे हो'... आप भी नहीं, हम ही ठीक कह रहे हैं। Why you are waiting, waiting for some explanation? हाँ, हाँ... 'हम गुरुजी के पास जा रहे हैं', अरे ! सुनते ही नहीं हैं एक बारी में बात। ठीक है, ठीक है, आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद !

हरे कृष्णा !